DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-6,
NEO-FRENDIANS:CONTRIBUTIONS OF SULLIVAN
LECTURE-51

सुल्लीभान का योगदान (CONTRIBUTIONS OF SULLIVAN)

सुल्लीभान का जन्म 1892 के फ़रवरी में अमेरिका में हुआ था| इनके जीवन के प्रारंभिक काल बहुत खुशहाल नहीं थे क्योंकि इनके पिता हमेशा कामों में व्यस्त रहते थे तथा माँ मानसिक रूप से कुछ क्षुब्ध रहती थी | परन्तु इस तरह के घरेलु वातावरण के बावजूद भी कक्षा में सुल्लीभान की गिनती उत्तम छात्रों में थी |इनकी प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा अमेरिका में हुयी थी | वे 1917 में एम०डी० की उपाधि प्राप्त किये और वे चिकित्सा शास्त्रका गहन अध्ययन शिकागो कॉलेज ऑफ़ मेडिसीनएवं सर्जरी में किये | 1921 में उन्हें वाशिंगटन के संत एलिजाबेथ

अस्पताल में मानसिक रूप से बीमार लोगों के उपचार करने के ख्याल से एक विशेष पद दिया गया | वहां इन लोगों से उन्हें उत्तम अनुभव प्राप्त हुआ जिसके आधार पर उन्हें आगे चलकर व्यक्तित्व के सिद्धांत का निर्माण करने में काफी मदद मिली | बाद में 1931 में वे निजी सेवा प्रदान करने के ख्याल से न्यूयार्क चले गए |1936 में वे पुनः वाशिंगटन लौट आये जहाँ उन्होंने वाशिंगटन स्कुल ऑफ़ साईकेट्री का शुभारम्भ भी किया | वे इस जनरल के अपने पुरे जीवन काल तक सम्पादक बने रहे| वे उक्त स्कुल के निदेशक भी अपने मृत्यु तक बने रहे | 1974 में उनकी एक बहुचर्चित पुस्तक कन्सेपशन ऑफ़ मॉडर्न साइकेट्री का प्रकाशन हुआ |1949 में उनकी मृत्यु हो गयी और मरणोपरांत उनकी एक दूसरी पुस्तक 'दी इंटरनेशनल थियोरी ऑफ़ साइकेट्री' का प्रकाशन हुआ |

सुल्लीभान शायद एक ऐसे नव फ्रायडवादी है | जिन्होंने संपूर्णतः एक विभिन्न सम्प्रत्ययात्मक सिद्धांत का वर्णन किया है | उनके विचारों एवं सिद्धांतो पर अमनोविश्लेषणात्मक श्रोतो का अधिक प्रभाव पड़ा | शायद यही कारण है कि उनकी भिन्नता फ्रायड से अधिक है | वे फ्रायडियन मनोविश्लेषण के बहुत सारे सम्प्रत्यय को अनुसूचित समझकर हटा देने का सफल प्रयास किये |उनमे लिबोडो,पराहं,अहं तथा यौन सिद्धांत प्रधान है इसके

बावजूद भी वे अपने मनोविज्ञान से फ्रायडियन मनोविज्ञान से बहुत सारे सम्प्रत्ययों को शामिल किये और उससे उन्नत बनाया |जैसे,सुल्लीभान ने फ्रायड के गत्यात्मक मनोविज्ञान से बहुत सारे संप्रत्यय को लिया |फ्रायड के सामान वे भी व्यक्तित्व विकास में बहुत सारे विशिष्ट आवश्यकताओं के महत्व को स्वीकारा |व्यक्तित्व का विकास अंतर्वैयक्तिक व्यवहार के सन्दर्भ में विकसित होता है |मनोविज्ञान के क्षेत्रो में सुल्लीभान के योगदानो को निम्नांकित तीन प्रमुख शीर्षकों के तहत वर्णन किया जा सकता है –

(1) व्यक्तित्व की गतिकी (DYNAMICS OF PERSONALITY)

(2) व्यक्तित्व के टिकाऊ पहलू (ENDURING ASPECT OF PERSONALITY)

(3) विकासात्मक अवस्थाएँ (DEVELOPMENT STAGE)

इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है –

(1) व्यक्तित्व की गतिकी –सुल्लीभान का मत है की मानव एक ऐसा उर्जा तंत्र है जो आवश्यकताओं द्वारा उत्पन्न तनावों को हमेशा कम करने की कोशिश करता है |उन्होंने तनाव को दो भागो में बाँटा है –आवश्यकताओ द्वारा उत्पन्न तनाव तथा चिंता द्वारा उत्पन्न तनाव |आवश्यकताओ से उत्पन्न तनाव से व्यक्ति

समाकलनात्मक व्यवहार करता है तथा चिंता से उत्पन्न तनाव द्वारा व्यक्ति असमाकलनात्मक व्यवहार करता है| सुल्लीभान का मत है की यदि माँ चिंतित रहती है ,तो उनके बच्चो में भी अपने आप चिंता विकसित हो जाती है |माँ को चिंतित होने से उनकी आवाज,व्यवहार,चेहरा तनावपूर्ण लगता है जिसे देखकर बच्चे भी वैसा ही भाव भंगिमा बनाना प्रारंभ कर देता है और वे चिंता के शिकार हो जाते है |

सुल्लीभान ने संज्ञान के तीन स्तर की पहचान की है जो इस प्रकार है –प्रोटोटैक्सिक ,पारटैक्सिक तथा सनटैक्सिक|

(2) व्यक्तित्व का टिकाऊ पहलू –सुल्लीभान ने अपने मनोविज्ञान में व्यक्तित्व के कई ऐसे पहलुओ पर बल डाला है जो टिकाऊ प्रकृति के होते है |ऐसे पहलुओ में निम्नांकित तीन प्रमुख है-

(I) गत्यात्मकता – सुल्लीभान के मनोविज्ञान में 'गत्यात्मकता' एक ऐसा पद है जिसे शीलगुण के तुल्य माना गया है | सुल्लीभान के अनुसार गत्यात्मकता से तात्पर्य एक ऐसे संगत से पैटर्न से होता है जो व्यक्ति की पूरी जिन्दगी में दिखाई देता है |उन्होंने

गत्यात्मकता को दो भागो में बांटा है –शरीर के विशेष क्षेत्र से सम्बंधित गत्यात्मकता तथा तनाव से सम्बंधित गत्यात्मकता |पहले तरह के गत्यात्मकता से व्यक्ति की विशेष शारीरिक आवश्यकताओ जैसे भूख तथा प्यास की आवश्यकता की तुष्टि होती है |दुसरे तरह की गत्यात्मकता के तीन उप प्रकार बतलाये गए है –वियोजक गत्यात्मकता ,अलगावी गत्यात्मकता तथा संयोजन गत्यात्मकता |

(II) आत्म-तंत्र –आत्म-तंत्र एक ऐसा जटिल तंत्र है जो अंतर्वैयक्तिक सुरक्षा को बरकरार रखते हुए व्यक्ति को दुश्चिंता से बचाता है |इस तरह से सुल्लीभान के अनुसार आत्म-तंत्र एक तरह का चिंता विरोधी तंत्र है क्योंकि इसमें वैसे गत्यात्मकता सम्मिलित होते है जिनसे दुश्चिंता की कमी आती है |

(III) मानवीकरण –व्यक्तित्व का दूसरा टिकाऊ का पहलू मानवीकरण है जिससे तात्पर्य अपने या दुसरे के बारे में मन में बने एक प्रतिमा या छवि से होता है |मानवीकरण की प्रतिमा आवश्यकता तुष्टि या दुश्चिंता की अनुभूतियों से बना होता है |जब व्यक्ति में संतोष जनक अंतर्वैयक्तिक संबंध विकसित होता है,इससे

उनके मन में घनात्मक प्रतिमा विकसित होती है तथा असंतोषजनक अंतरवैयक्तिक संबंध से व्यक्ति में दुश्चिंता तथा ऋणात्मक प्रतिमा विकसित होती है |सुल्लीभन का मत है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में पाँच सरल मानवीकरण विकसित होते है –उत्तम –माँ ,बुरा –स्वयं ,उत्तम स्वयं ,तथा स्वयं नही |

(3) विकासात्मक अवस्थाएँ –सुल्लीभन ने व्यक्तित्व विकास के सात अवस्थाओं का वर्णन किया है जो निम्नांकित है-

(i) शैशवावस्था (INFANCY)-यह अवस्था जन्म से लेकर लगभग 24 महीने तक का अर्थात जब वह सुस्पष्ट भाषा का उपयोग प्रारंभ कर देता है ,होता है | जन्म के समय शिशु एक पशु के सामान होता है तथा माँ से जैसे-जैसे उसे प्यार एवं स्नेह मिलता है उसमे मानवीय गुणों का विकास होता जाता है |

(ii) बाल्यावस्था (CHILDHOOD)-यह अवस्था सुस्पष्ट भाषा बोलने से लेकर साथी-संगी की आवश्यकता उत्पन्न (अर्थात लगभग पाँच वर्ष की उम्र) होने तक की होती है |इस अवस्था में भाषा का विकास हो जाने से शैशवास्था में विकसित विभिन्न तरह के मानवीकरण या प्रतिमाओ का आपस में विलयन होता है |

(iii) तरुणावस्था (JUVENILE ERA)-यह अवस्था पाँच-छह साल के अवस्था से प्रारम्भ होकर 8-9 साल की अवस्था जब बच्चे में घनिष्ठ दोस्ती की आवश्यकता उत्पन्न होती है ,तक का होता है |इस अवस्था में बच्चे प्रतिस्पर्धा,समझौता तथा सहयोग की भावना विकसित होती है |

(iv) प्राक किशोरावस्था (stage of preadolescence)—इस अवस्था की शुरुआत घनिष्ठता की आवश्यकता से प्रारंभ होकर यौवनारंभ तक का होता है |इस अवस्था में बच्चे अपने ही यौन के किसी एक व्यक्ति से अधिक घनिष्ठ दोस्ती कर लेते है | इसमें दोस्ती का आधार स्नेह एवं घनिष्ठता होती है |

(v) आरंभिक किशोरावस्था (stege of early adalescence)-यह अवस्था यौवनारंभ से प्रारंभ होकर उस समय तक की होती है जबतक उसमे विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ स्नेह या प्यार करने की आवश्यकता उत्पन्न नहीं हो जाती है |

(vi) उत्तर किशोरावस्था (stage of late adalescence)-इस अवस्था की शुरुआत जन्नांगी क्रियाओं के स्थिरीकरण

से प्रारंभ होकर व्यस्कावस्था में स्थायी प्रेम सम्बन्ध करने तक का होता है |

(vii) परिपक्वता (maturity)-सुल्लीभान ने इस अवस्था के बारे में कुछ ख़ास नहीं कहा है क्योंकि उनके नज़र में सच्चे अर्थ में परिपक्वता विकसित होने की कोई स्पष्ट अवस्था या उम्र नहीं होती है |उनका मत था की प्रत्येक गत अवस्था का महत्वपूर्ण उपलब्धि की अभिव्यक्ति एक परिपक्व व्यक्ति के रूप में होती है |

सुल्लीभान के इन योगदानो के बावजूद भी आलोचकों ने इनकी आलोचनाएँ की है जो निम्न है –

1. आलोचकों का मत है की सुल्लीभान ने अपने तंत्र में कुछ काल्पनिक संरचनाओ को जरुरत से ज्यादा महत्त्व दिया है इनमे मानवीकरण ,आत्म –तंत्र आदि प्रमुख है |
2. कुछ आलोचकों का मत है की सुल्लीभान ने व्यक्तित्व के बारे में जो विचार व्यक्त किये है ,वे पूर्णतः उनके नैदानिक प्रेक्षणों पर आधारित है |चूँकि उनके इन प्रेक्षणों में सामान्य व्यक्तियों को नहीं के बराबर सम्मिलित किया गया है ,अतः उनके व्यक्तित्व विकास के सिद्धांत को सामान्य व्यक्तियों पर लागू करना संभव नहीं है |

इन आलोचनाओं के बावजूद सुल्लीभान के मनोविज्ञान का महत्व काफी अधिक है |